27/10/1966 गुरुवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ओम् नमः शिवाय। पितु मात सहायक स्वामी सखा, तुम ही सबके रखवारे हो। जिसका कोई आधार नहीं उसके तुम एक सहारे हो.....

...ये मीठे–2 सिकीलधे बच्चों ने भक्तों की महिमा सुनी। तुम भी ये महिमा गाते थे। अब तुम महिमा नहीं गाते हो और न कोई तुम्हारे लिए महिमा की ज़रूरत है; क्योंकि जो भगत करते हैं सो तुम बच्चे नहीं कर सकते हो। थे भगत और तुम बच्चों को भगवान मिला है। सबको इकट्ठा नहीं मिल सकते हैं; क्योंकि बैठ करके बाप को पढ़ाना होता है। तो सबको इकट्ठा कैसे पढ़ाएँगे! ये तो हो ही नहीं सकता है। सभी भगत इकट्ठे तो हो नहीं सकते हैं। हाँ, इतना ज़रूर है कि पढ़ाना इनको ज़रूर; क्योंकि राजयोग स्थापन करते हैं। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी सतयुग का राज्य स्थापन करना है ज़रूर। बच्चों को भी समझाना है। अभी आजकल के प्रदर्शनी के लिए बच्चों को तैयार होना है समझाने के लिए। तभी तो सर्विस करेंगे ना। सर्विस भी कोई बहुत डिफीकल्टी तो नहीं है ना बच्चे! ना। राज स्थापन करने अपने लिए; क्योंकि अपने लिए तुम राज स्थापन करते हो। तुम शिवशक्ति महारथी हो, सेना हो। तुम जानते हो कि हम शक्ति सेना है। तो ये तो बच्चे जानते हो कि सेना हो, कोई ड्रिल वगैरह नहीं सीखनी है बच्चों को। तुम बच्चों को है ही रूहानी ड्रिल सीखनी, जो बाप समझाते रहते, बच्चे और ये ड्रिल बहुत नामी–ग्रामी है भारत की; क्योंकि ये है योग की ड्रिल। इसको कहा ही जाता है 'योग की ड्रिल'। आत्मा को परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाना है; क्योंकि उनसे इनहेरीटेन्स लेना है। ये बाप से जिसको वर्सा लेना होता है, उनको कोई लड़ाई करनी पड़ती है क्या! तो ये तुम तो बैठ करके वर्सा लेती हो बाप से। तुम्हारा इन सब लड़ाइयों से कोई कनेक्शन है ही नहीं; क्योंकि तुम हो बेहद के बाप के वारिस और तुम बच्चों को बाप से वर्सा लेना है। जब बच्चों को बाप से वर्सा लेना हो तो लड़ाई का सवाल उठता ही नहीं है। समझा ना बच्ची! वर्सा में कोई, बाप से वर्सा पाना है तो बस बाप से ही वर्सा पाना है ना।..बाप का बन फिर बाप के मत पर चलना है। अभी मत तो कोई लड़ाई वगैरह की तो है नहीं। सिर्फ बाप क्या करते हैं? कहते हैं बच्चों को कि मीठे बच्चे, तुम जो सतोप्रधान थे, सो राज करते थे। तुम जानते हो अच्छी तरह से, अभी तुम बच्चों को स्मृति आई; क्योंकि स्मृति देते हैं ना कि हे बच्चों, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। गाते ज़रूर हो कि 84 जन्म मनुष्य लेते हैं। अभी 84 लाख तो बिल्कुल ही गपोड़ा ही है। किसके बुद्धि में भी नहीं आते; परन्तु जो पढ़ने वाले होते हैं भक्तिमार्ग वाले, वो तो जो आते हैं सो पढ़ते रहते हैं। जो शास्त्रों में लिखा है सो पढ़ दिया। जो ड्रामा (के) प्लैन अनुसार भक्तिमार्ग के ये शास्त्र, चित्र वगैरह जो कुछ भी हैं, वो भक्तिमार्ग की सामग्री तो फिर आएँगी। जैसे भक्तिमार्ग की सामग्री आएँगी सीढ़ी उतरने की वैसे तुम बच्चे जानते हो कि सतयुग से भी तुम कैसे पुनर्जन्म लेते रहते हो। सो भी तो बच्चों को समझाया। बच्चों ने समझा है कि सतयुग–त्रेता में भक्ति नहीं होती है। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। ये गाते भी हैं–ज्ञान और भक्ति। तुम बच्चों के बुद्धि में है अभी। और कोई भी मनुष्य के बुद्धि में ये है नहीं। कोई भी ऋषि–मुनि फलाना, कोई को भी बुद्धि में नहीं है कि ज्ञान क्या है, भक्ति क्या है। ये जानते हैं कि बरोबर रामचंद्र का राज था, श्री ल०ना० का राज था। वो समझते हैं, ये सृष्टि चली आती है सुख–दुख की। बस। उन लोग को ये कुछ मालूम नहीं है, कोई को भी कि सुख अलग चीज़ है, दुःख अलग है। सुख बाप देते हैं, दुख रावण देते हैं। ये कोई भी कुछ भी नहीं जानते हैं। इसलिए बाप कहते हैं ना– बच्चे, तुम इसके पहले बिल्कुल ही (...), देखो; क्योंकि तुम ही हैं ना सूर्यवंशी, जो अभी शूद्रवंशी बने थे, अब ब्राह्मण वंशी बने हैं। तो तुमको ही कहेंगे ना। तुमको समझाएँगे ना। कितने अक्लमंद तुमको बनाया! तुम विश्व के मालिक बने थे। अभी ड्रामा के प्लैन

अनुसार जो समझाया बच्चों को कि 84 जन्म भोग कर–करके कैसे–2 उतरते आए हो। अभी बिल्कुल तुच्छ बुद्धि बन गए हो; क्योंकि तमोप्रधान बुद्धि को तो तुच्छ बुद्धि कहेंगे ना; सतोप्रधान बुद्धि को स्वच्छ बुद्धि कहेंगे। वो ऊँच बुद्धि कहेंगे, वो नीच बुद्धि कहेंगे। नीच, ऊँच को नमस्ते करते हैं। देखो करते हैं ना। ... मंदिर में जाते हैं देवताओं के। अपन को नीच कहलाते हैं, उनको ऊँच कहलाते हैं। ये तो है बरोबर ना बच्ची। अभी ऊँच और नीच किसको भी कोई पता नहीं, तुम ब्राह्मणों को भी पता नहीं। कोई हम ही सचपच ऊँच थे और हम ही नीच बने हैं– ये किसको भी कोई भी पता नहीं। ये बाप ने आकर समझाया है। ये तो ज़रूर है कि जिसने पहले–2 नम्बर में आया, पहला नम्बर लिया, उनको ही 84 जन्म लेना होगा। तो ज़रूर वो पहले सतोप्रधान होगा और पीछे तमोप्रधान बनेगा। जो ऊँच–ते–ऊँच होंगे सो पहले–2 नम्बर से शुरू होंगे। तो ये तो पक्का हुआ ना बच्चों को; क्योंकि 84 जन्म भी तो सूर्यवंशी ही लेंगे ना; क्योंकि फिर उसमें 84 भी आएगा, 83 भी आएगा, 82 भी, बाबा ने समझाया ना। तो अभी तुम समझते हो बच्चे कि हम क्या थे, विश्व के मालिक थे! विश्व के मालिक कोई भूख बनते(मरते) हैं क्या, कोई पतित–नालायक बनते हैं क्या? नहीं। उनकी महिमा ही देखो कितनी ऊँची है। अभी कोई की महिमा ऐसे हो सकती है? किसकी महिमा बैठ करके, कोई मनुष्य की करेंगे कोई? फिर भी उनकी महिमा बैठ करके करेंगे। बाप ने तो महिमाएँ समझाई हैं ना। श्री लक्ष्मी–नारायण की महिमा नहीं करते, कृष्ण की बैठ करके महिमा करते। महिमा तो इनकी भी करते हैं बैठ करके; क्योंकि सर्वगुण सम्पन्न तो इनको भी कहते हैं। सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण तो इनको कहते ही हैं और ये समझने की भी बात है कि बरोबर ये 16 कला सम्पूर्ण है और फिर कहते भी हैं कि त्रेता में 14 कला सम्पूर्ण। अभी 14 कला सम्पूर्ण नहीं कहेंगे, सिर्फ 14 कला। उसको 16 कला सम्पूर्ण कह देंगे, अक्षर लाएँगे। 14 कला को 'सम्पूर्ण' अक्षर पिछाड़ी में नहीं डालेंगे। इसलिए इसमें भी कभी 14 कला। बस 14 कला, सम्पूर्ण नहीं। 'सम्पूर्ण' 16 कला वाले को लिखना है। ये जो बच्चियाँ बैठ करके करेक्ट करती हैं ना बच्चे, तो वो जाँच रखें कि वहाँ 14 कला सम्पूर्ण तो नहीं लिखा है। सम्पूर्ण सिर्फ 16 कला को लिखना होता है; क्योंकि अभी तुम बच्चे बैठ करके 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। कैसे? सो तो बच्चों को बहुत सहज–ते–सहज, अति सहज, इससे कोई भी सहज मार्ग नहीं भेंट में। देखो, भगवान से मिलने के लिए भगत कितना धक्का खाते हैं। आधा कल्प धक्का खाया हुआ है। तो ये है बिल्कुल ही सहज। तो बाप तो रहमदिल है ना बच्चे। तरस पड़ता है। वो जानते हैं ये तो बिचारे थक गए होंगे भक्तिमार्ग में धक्का खाय–खाय–खाय। तब तो उसमें भी लिखा हुआ है ना– द्रौपदी को भी पैर दबाए। क्यों दबाए? कि तुम थक गई हो। तो एक की तो बात नहीं है ना। देखो, बाबा भी आते हैं ना, तो बुड्ढियों को कहते हैं, थक गईं हो बहुत, भक्तिमार्ग में धक्का खाकर थक गई हैं। तो ऐसे–2 बैठ करके ये दबाते हैं। कोई को कुछ तो निशानी है ना। बाप है ना। बच्चे हैं, उनको समझाते हैं कि बच्चे, तुम थक गए हो। अच्छा, अभी तुम्हारा हम थक बिल्कुल जल्दी से दूर करते हैं। तुमको कोई भी तकलीफ नहीं देता हूँ। वो जो राम–4 कहते रहते थे वो है बिगर तकलीफ। उठते,बैठते,चलते पॉकेट में माला पड़ती है। तुम पादरियों को देखो कि उनके पॉकेट में माला पड़ती है, पॉकेट में भी फेरते रहते हैं। ऐसे जो पक्के भगत होते हैं, आजकल तो इतने कोई हैं नहीं, वो भी ये जो इनका कुर्ता होता है ना, उसके अंदर माला पड़ी रहती है, उनका हाथ उस माला में रहते हैं और फेरते रहते हैं। तुम देखा नहीं है; क्योंकि इतना तुम्हारा सम्पर्क बहुतों से तो आया नहीं है। बाबा का तो सम्पर्क सबसे आया है– पादरियाँ–वादरियाँ ये सभी। ये नर्से जो होती हैं इनकी पादरियानी, वो बाइबिल–2 ले करके आकर समझाती हैं कि ये कहाँ क्रिश्चियन बन जावें। वो आती हैं। दुकानों पर भी आती हैं समझाने के लिए।

तो यहाँ तो वो माला का भी कोई बात नहीं है। माला यानी ये माला फेरना तो सबसे सहज है ना, पर ये अन्दर से राम–2 अंदर में चलता रहता है उनके। राम–2 ज़रूर चलता रहता है। वो भी नहीं कहते हैं– बाबा कहो। नहीं, बाबा कहते हैं– सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। ऐसे नहीं कि शिव–2 कहो। नहीं, बाबा–2 कहो। ये भी नहीं कहो। सिर्फ बुद्धि से, आवाज़ नहीं; क्योंकि तुम बच्चे जानते हो ना कि हम आवाज़ से परे जाने वाले हैं। तो आवाज़ नहीं करना है याद भी करने में। बिल्कुल नहीं एकदम। शांति से। ये जानते हैं कि हम आत्मा हैं। वो बाबा है। बाबा ने कहा है– मुझे याद करते रहना है, तो तुम्हारी(तुम) जो पतित बन गए हो, जो तमोप्रधान हो गई है, उड़ नहीं सकती है, तो ये खाद निकल जावे; क्योंकि पहले आए थे तो सतोप्रधान थे ना बच्ची। जो कोई आते हैं, सतोप्रधान आते हैं। यहाँ वो सभी तमोप्रधान बन करके यहाँ पड़ जाते हैं। कोई वापस नहीं जा सकते। कोई एक भी वापस नहीं जा सकते हैं। तो इसलिए फिर बाप सहज–ते–सहज बताते हैं। काम करते, घर में रहते एक तो पवित्र ज़रूर रहना है। वो तो कमल फूल के समान तो बिल्कुल ही अच्छी तरह से समझाया हुआ है कि गृहस्थ–व्यवहार में रहते हुए कमल फूल के समान तुमको पवित्र रहते(रहना) है; क्योंकि ये पानी में रहते हैं ना। कमल फूल पानी में रहते हैं। और कोई देखा है कोई फूल पानी में कमल फूल के समान! नहीं। इनकी भी बड़ी पंचायत है। इनमें भी बहुत ही चीज़ें पैदा होती हैं। गृहस्थी है। ये कमल का फूल बड़ा भारी गृहस्थी है। देखो, उनको बच्चे भी बहुत पैदा होते हैं। नीचे में उनके वो भी नीचे में है। वो भी काम में आती है। बहुत चीज़ें काम में आती हैं। तो बोलता है– जैसे वो गृहस्थी ये कमल–फूल के समान ऊपर में रहते हैं, उनको पानी का स्पर्श नहीं होता है, वैसे तुम भी उस विषय सागर में रहते हुए कमल फूल के समान पवित्र रहो। ये तो बहुत अच्छा समझानी देते हैं ना बच्चों को। भई है ये विषय सागर। अभी तुमको मालूम पड़ा है कि बरोबर ये विषय वैतरणी नदी है। इसमें रहते हुए। सागर है ना। विषय सागर है एक। नदी भी नहीं, पर सागर है एकदम। बाकी सागर में कोई कमल फूल नहीं होते हैं, नदियों में होते हैं, मीठे जल में होते हैं। तो बाप बैठ करके अच्छी तरह से समझाते हैं बच्चों को। कि कोई तकलीफ तो नहीं बच्चों को देते हैं। सिर्फ याद करने की तकलीफ, सो ज़रूर मिलनी चाहिए ना। नहीं तो अपने से हमेशा पूछो कि हम जो कहते हैं पतित से पावन बनें, सो नदियों–वदियों में तो बने नहीं। याद उनको करते हैं, जाते हैं नदियों में, याद उनको करते हैं– पतित–पावन आओ, जाते हैं वहाँ। इतनी भी ... समझ नहीं है। वो भी गुरुलोग कहते हैं कि ये भी पतित–पावनी हैं। तो कहते हैं ना। कितने बेसमझ हैं ना सभी! बेसमझ हैं तभी तो इतना, तमोप्रधान को तो बेसमझ कहेंगे ना बच्ची। सतोप्रधान को समझदार। उसकी भेंट। देखो ये सामने भेंट है ना। अभी जो तुम्हारे सामने बैठे हैं, तुम्हारे भी सामने इनकी भेंट है। ये देख कर–करके वण्डर खाते हैं। तुमको भी वण्डर खाना है कि तुम भी तो महाराजकुमार बनते हो ना। जो पोत्रे होते हैं ना। ये बच्चा हुआ, तुम हैं पोत्रे। जैसे वो निज़ाम के बच्चे होते हैं ना, तो उनको साहबजादे कहा जाता है। तुम भी तो साहबज़ादे हो वा पोत्रे भी तो और आखरीन में राजाई तो लेंगे ना। उसके लिए तो पुरुषार्थ कर रहे हो ना। तो तुम बच्चों को तो खुशी होनी चाहिए। पौत्रों को तो और ही बहुत खुशी होती है–हमारा तो हक है पूरा, बाबा द्वारा हमारा तो हक है; परन्तु यहाँ हक है, तुम बच्चों को समझाया, पुरुषार्थ से। वो हक है हिस्सा–विस्सा लेने से, हिस्सा करके कायदे का, वहाँ कायदा है। यहाँ नहीं, यहाँ पुरुषार्थ है। किसको पुरुषार्थ करना है? आत्मा को पुरुषार्थ करना होता है। तो आत्मा को पुरुषार्थ भी क्यों? कि कन्या को भी जो आत्मा है, वो भी पुरुषार्थ करेगी, तो उनकी भी जो आत्मा है, पुरुषार्थ करें। उनमें भेद रहता है ना बच्चे। बाप का वर्सा सिर्फ बच्चे को मिलता है, बच्ची को तो नहीं मिलता है ना। अच्छा, यहाँ तो बाप का

वर्सा सभी आत्माओं को मिलता है। यहाँ बच्ची और बच्चे का प्रश्न नहीं उठता है। सभी आत्माओं को बाप से वर्सा लेना है; क्योंकि आत्मा ही 'बाबा–2' करती है ना शिव को। तो बाप समझाते रहते हैं बच्चे कि तुम हर एक को हक है और याद की यात्रा से तुम बहुत अच्छा ऊँचा वर्सा ले सकते हो और औरों को भी पुरुषार्थ कराओ। तो अभी तो देखो, प्रदर्शनी भी आती रहती है ना बच्ची, उनमें भी बाबा ने समझाया है कि पहले–2 नम्बरवन परिचय। तो परिचय के पीछे आती है वर्सा, रचना। तो जब भी कोई आते हैं, उनको पहले–2 ये निश्चय बिठावे– ये तुम्हारा बाप है बेहद का। पहले–2 बाप के ऊपर खरा रहना चाहिए। नहीं तो बच्चे, कोई को भी मालूम नहीं है कि शिवबाबा कोई हमारा बाबा है; क्योंकि सर्वव्यापी कर दिया, कुत्ते में, बिल्ले में। वो तो गालियाँ देते रहते हैं। तो उनको पहले बताना चाहिए, ये तुम्हारा बाप है ना। भगवान ये एक ही है ना। तुम ब्रह्मा सो भगवान नहीं कहेंगे, विष्णु को तो नहीं। ब्रह्मा देवताय नमः, विष्णु देवताय नमः, शंकर देवताय नमः। उनको भगवान तो नहीं कहेंगे ना। कि उनको कहा ही जाता है–देवता। तुम ऐसे तो नहीं कहेंगे, वही भगवान, ये भी वही भगवान। नहीं, वो तो भगवान है, वो तो पतित–पावन है। तुम इनको थोड़े ही कहेंगे पतित–पावन, इनको थोड़े ही कहेंगे पतित–पावन, इनको थोड़े ही कहते हो पतित–पावन। इनकी महिमा ही अलग–2 है। तो पहले–2 जब प्रदर्शनी में भी समझाते हो; क्योंकि आजकल तुम बच्चों को प्रदर्शनी में बहुत समझाना होता है। इसलिए पहले–2 तो ये त्रिमूर्ति ही है; क्योंकि अकेला शिव भी नहीं। नहीं, त्रिमूर्ति ज़रूर चाहिए; क्योंकि वर्सा मिलना है ना बच्चे। कोई से भी, कोई द्वारा तो वर्सा लेंगे। निराकार से वर्सा कैसे ले सकेंगे! तो पहले–2 इनके ऊपर, ये बाप है ना बरोबर। ये रचना है ना। वो रचता है ना सबका। ये सूक्ष्मवतन भी इसने रचा है ना। तो ये ब्रह्मा–विष्णु–शंकर भी सूक्ष्मवतन (...), रचना हैं ना। तो रचता से वर्सा मिलता है। रचना को रचना से वर्सा कभी मिलता ही नहीं है। ये ब्रह्मा–विष्णु–शंकर रचना हैं। इनसे भी वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा मिलता है बाप से। तो जो भी हैं यहाँ, ये साधु–संत–महात्मा जो भी हैं, सभी मनुष्य हैं ना। ये सभी रचना। इन सबका रचता एक। तो इसलिए गाया जाता है– सर्व की सद्गति दाता एक, सर्व का बाप भी एक। ये बाबा भी है। देखो, इतना पहले–2 बाप की महिमा करते हैं। ये बाबा है सबका। अच्छा, इसी को ही पतित–पावन भी कहा जाता है। अभी ये ज्ञान का सागर भी इनको कहा जाता है; क्योंकि ये ज्ञान का सागर है। वो जो फिर शास्त्र वगैरह हैं, वो भक्ति के सागर हैं। वो कोई ज्ञान नहीं है वहाँ। वो हैं भक्ति के शास्त्रों की अथॉरिटी। ..... हम पतित से पावन बन जाते हैं सिर्फ याद से। तो सर्वशक्तिवान हुआ ना बच्ची, जो हम सबको पतित से पावन बनाए देते हैं। सभी को, ये जो भी है रावण का राज्य, उनसे मुक्त कर देते हैं। तो शक्ति हुई ना। उसको महिमा तो देते हैं ना। तुम बच्चे भी तो जानते हो ना कि हमको कितनी शक्ति मिलती है। गाया ही जाता है–शिवशक्ति। शिवबाबा से हम शक्ति लेते हैं। फिर क्या करते हैं? क्योंकि सभी लेते हैं ना। ये भी लेते हैं, ये भी, तो शक्ति का अवतार तुम भी हो गए ना बच्चे। शक्ति, शिवशक्ति, ये भी शिवशक्ति; क्योंकि बच्चे जो हैं, जो शिव को जितना याद करे उनको जास्ती शक्ति मिलती है। उस शक्ति से क्या होता है? ये जो पतित बना हुआ है, ये जो खाद पड़ी हुई, वो निकल जाएगी। अभी ये तो हर एक को अपने लिए पुरुषार्थ करना चाहिए ना, ये तो ओना रहना चाहिए ना, फुर्णा रहना चाहिए ना; क्योंकि और तो कोई के पास ये फुर्णा है नहीं। तुमको रात–दिन की ये चिंता लगी हुई रही है– कहाँ हम बाबा को याद करें, तो हम पतित से पावन बन जाएँ, तमोप्रधान से सतोप्रधान (...) जाएँ। अभी क्या करें? ये जो माया है ना, वो बड़े तूफान ले आती है। हाँ, बाप कहते हैं ज़रूर। ऐसे तो नहीं है कि बस, थोड़ी–सी बात में विश्व के मालिक बन जाएँगे। कुछ तो सहन करना

पड़ेगा ना। तो बस ये लड़ाई है तुम्हारी माया से। तुमको जो कुछ भी वो लड़ती है, झगड़ती है, ये। एक तो याद भुलाएगी, दूसरा तूफान ले आएगी विकल्पों का। समझा ना! फालतू–2 खयालात का। जो अज्ञान काल में नहीं आते होंगे, ज्ञान काल में आएँगे। उनका काम ही है तूफान। उसको कहा ही जाता है–तूफान। वो कभी कैसा खयालात लाएगी, कभी उल्टे विकल्प। बैठेंगे याद करने में, तो कहाँ–न–कहाँ ले जाएँगे। उल्टा–सुल्टा, चरी–खरी बातें याद पड़ेंगी; क्योंकि यहाँ याद करते हो ना। ऐसे नहीं आएगी, अज्ञान काल में किसको नहीं आती है। इस समय में आएगी हर बात की; क्योंकि युद्धि का मैदान में है ना बच्ची, माया से। तो वो ये, बस जो कुछ भी तुमको मेहनत है सारी, इस योग में और नामीग्रामी भी योग है। भारत का मशहूर भी योग कहा जाता है। समझा ना बच्ची! तो योग के लिए भी बाबा नॉलेज देते हैं, ज्ञान देते हैं..। देखो, ये ज्ञान देते हैं ना– बच्चे, तुम अपन को आत्मा समझ करके मुझे याद करो। तो ये याद के लिए भी तो समझानी (...), समझानी को कहा जाता है–ज्ञान। तो कितना पाई–पैसे का ज्ञान है। तुम अपन को आत्मा समझो। ऐसे कोई भी मनुष्य मात्र कभी किसको बैठ करके समझाय नहीं सकते हैं। कोई भी महात्मा हो, विद्वान हो, शंकराचार्य हो, उनको ये कहना आएगा ही नहीं...। वो तो कहते हैं– सभी भगवान हैं। जिधर देखता है तिधर परमात्मा ही परमात्मा है। वो तुमको कह ही नहीं सकेंगे तुम आत्मा हो; क्योंकि वो कहते हैं ना–सर्वव्यापी है, तो परमात्मा हुआ ना। वो तुमको ऐसे अक्षर नहीं कहेंगे। ये बाप कहते हैं–तुम आत्मा हो ना। बरोबर आत्मा ही तो 84 जन्म भोगती है ना; परमात्मा तो 84 जन्म नहीं भोगते हैं। पीछे तुम कैसे कह सकते हो कि भई परमात्मा इसमें है? परमात्मा भी जन्म–मरण में आते हैं, कभी कोई सुना है! कभी कोई बोलेगा ही नहीं। तो इस बात में झट कह देना चाहिए कि नहीं, आत्मा ही तो 84 जन्म लेती है ना, एक शरीर छोड़कर दूसरा। आत्मा में ही तो अच्छे वा बुरे संस्कार होते हैं ना। तो आत्मा में बहुत फर्स्ट क्लास संस्कार इनमें हैं ना, जिनकी इतनी महिमा की जाती है। जिस आत्मा में गंदे संस्कार हैं, वो तो बैठ करके कहते हैं कि हम गंदा है, विकारी है, फलाना है, टीरा है, कपटी है, चोर है, शैतान है, हरामखोर है। हैं ना पाप आत्माएँ। वो गुरूनानक भी कहते हैं ना– असंख चोर (...)। देखो, कहते हैं, तुम लोग बहुत गाली देते हैं। तो तुम उनको बताओ, हम समझाते हैं– गुरूनानक जिनकी इतनी कहते हैं, वो भी तो कहते हैं– असंख चोर हरामखोर। अभी हरामखोर किसको कहा जाता है? जो विकार में जाते हैं। अभी बैठे हैं वो पंडित जभी ग्रंथ निकाल करके, बड़े मुख्य बन करके बैठते हैं गुरू, वो भी कहते हैं– असंख चोर हरामखोर। अपनी दिल से तो पूछें– हम हरामखोर हैं, हलालखोर हैं? हलालखोर कहा जाता है पवित्र को, हरामखोर कहा जाता है पतितों को। अभी अपनी दिल से तो वो पूछें कि हरामखोर हैं या हलालखोर हैं? अभी उनको कौन कहे कोई! कुछ कहो तो बिगड़ पड़े एकदम। नहीं तो बुद्धि तो ऐसे कहती है ना बरोबर। नहीं तो ये गाली क्यों देते इतना! तो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं– बच्चे, हम बहुत सहज उपाय बताते हैं और एक तो तुम हैं ही पतितों को पावन करने, जो दुखी मनुष्य हैं उनको सुख पहुँचाने के लिए, तो किसको भी मंसा–वाचा–कर्मणा, अंग्रेजी में कहा जाता है–थॉर्ट, वर्ड, डीड, किसको भी दुःख नहीं देना। ठीक है ना बरोबर। अच्छा! किसको भी दुःख नहीं देना। अपन को भी दुःख न देना। यानी कोई भी कुकर्म करके, विकर्म कर–करके। चोरी–चकारी, ये शैतानी, झूठ वगैरह– ये सभी हैं कुकर्म। इसको विकर्म भी कहा जाता है, तो कुकर्म भी कहते हैं। तो ये नहीं करना। तुमको अगर करना पड़ता हो तो पहले बाप से पूछो– इस हालत में हम विकर्म कर सकते हैं? जैसे सिपाही होते हैं, बंदूक वाले बहुत होते हैं, तुमको मालूम है (...)। ये कर्म करते हुए भी योग में रहें बाप के। तो वो पाप तो आपे ही कट जाएगा; क्योंकि ये तो कोई मारना, ये तो कोई (...), पाप

तो सबसे जास्ती– एक/दो के ऊपर काम–कटारी चलाना। फिर तुम इनको कैसे करेंगे, जब वो महापाप, उनके लिए बंद करते हैं तो ये तो कुछ हुआ ही नहीं। ये जो मनुष्यों को मारते हैं, लड़ाई में मारते हैं, वो उतना कोई पाप थोड़े ही है। वो तो अपने शहर के लिए, वो अपने पेट के लिए (...)। .....तो पूछो बाबा से हर एक बात, तभी कहते हैं ना– कदम–2 पर जो कुछ भी न समझते हो सो बाबा से पूछो। हर एक बात, जिसमें थोड़ा भी ख्याल आवे, तो ये तो पाप का काम है, ये तो फलाना है, तो पूछो; क्योंकि हर एक का कर्तव्य अपना–2 है ना बच्ची, कर्म अपना–2 है ना। तो हर एक का सर्जन है ना बच्चे। सबकी बीमारी तो एक जैसी नहीं है ना। सबके कर्म एक जैसे नहीं हैं, सबके पाप एक जैसे नहीं हैं। तो हर एक को पूछना है, कदम–2 पर पूछना है; क्योंकि मंज़िल है बड़ी। वो जाते हैं ना बच्ची। जब पहाड़ों पर आगे जाते थे, तो जो जिसके पास जाते हैं, बद्रीनाथ की जय, श्रीनाथ की जय, अमरनाथ की जय, अमरनाथ की जय। अमरनाथ को याद करते जाएँगे और वो पहाड़ी से तीर्थ पर जाते रहेंगे। समझा ना! याद ज़रूर करेंगे। कहाँ गिर जाऊँ तो अमरनाथ तो याद में हो। तो गिरूँ तो मरता हूँ, तो अमरनाथ तो याद में हो ना। तभी घड़ी–2 अमरनाथ, अमरनाथ की जय, अंदर में अमरनाथ रक्षा करना, अमरनाथ रक्षा करना। कहाँ भी जाएँगे तो जिसके पास जाएँगे, बद्रीनाथ रक्षा करना। कहाँ वहाँ पैर न थिरक जावें। अभी तो तीर्थ यात्राएँ कुछ सहज हो गए हैं ना। अभी ये है ज्ञान, जो बाप में है, जो बैठ करके समझाते हैं। अभी ये तो पार्ट बजाते हैं ना। अभी तुम बच्चे भी समझे तो हम पार्टधारी हैं। इनको भी पार्ट मिला हुआ है। इसको पार्ट बजाना है, इसमें बड़ाई काहे की है! जब नाटक बनते हैं, वो होशियार हैं, उनको पार्ट देते हैं राजा–रानी का, हीरो–हीरोइन का। उनको पार्ट बजाना है, बस। उनको मिल्कियत जास्ती मिलती है। इसमें बड़ाई की क्या बात है! जितना जो पढ़ेगा वो अपना पद पाएँगे। इसमें बड़ाई तो कोई की है नहीं। बड़ाई है एक की, जो आ करके.... सर्व मनुष्यों को। उनका पार्ट है। सो बोलते हैं– मेरा पार्ट है ना इसमें नूँधा हुआ। ये तो मैं कल्प–2 अपना पार्ट बजाता हूँ। मेरा पार्ट है..ये कॉमन पार्ट, सो मैं आ करके बजाता हूँ। तुम सभी बच्चों को पतित से पावन बनाता हूँ। ये पुरानी दुनिया को अभी मैं तो नहीं विनाश करता हूँ ना। नहीं, ड्रामा में सबको पार्ट मिला हुआ है। कौन विनाश करते हैं? जिनको पार्ट मिला हुआ है ये ऐटमिक बॉम्ब्स निकालना। अच्छा, पार्ट मिला है। 5 तत्वों को भी तो पार्ट मिला हुआ है। उनकी भी क्या बड़ाई है! उनको भी तो पार्ट बजाना है इस समय में। धरती को उथलना है, बरसात को पड़ना है; क्योंकि विनाश का पार्ट उनको मिला हुआ है। तो पार्ट मिला हुआ है ना उनको। इसमें बड़ाई काही है! अविनाशी–अनादि पार्ट मिला हुआ है, सो पार्ट बजा रहे हैं। तो बाप कहते हैं मैं भी पार्ट बजाता हूँ। तुम भी जानते हो कि फिर अभी तुमने पार्ट बजाया है, इसलिए अभी फिर से ले रहे हो और ये तुम पार्ट बजाते हो। पार्ट तुम्हारा पुराना बजता ही रहता है, इसमें बड़ाई काहे की है। फिर भी भगत लोग महिमा गाते हैं। ये कोई महिमा नहीं गाते हैं, ये तो बोलते हैं– भक्ति में महिमा होती ही रहती है। भगवान की महिमा भी करते ही रहते हैं। बाकी इनकी क्या महिमा है भला! कोई बतावे। बिचारे राज्य करते–2 जाकर मुर्दों के समान पतित बन गए हैं। देखो, तुम लोग पहले क्या थे! अभी तो ज्ञान मिला है। क्या थे! कुछ भी नहीं एकदम, वर्थ नॉट ए पैनी। अभी देखो क्या बनते हो! उफ! विश्व का मालिक! ये पार्ट है। ये फिर भी हम विश्व का मालिक बनते हैं। फिर भी चक्कर लगाकर फिर हमको ऐसे ही बनना पड़ेगा। फिर हम पार्ट (...), बाबा आएगा। ये क्या है! इसमें कोई बड़ाई है क्या, कोई महिमा है क्या? हमारे लिए कोई महिमा नहीं है, एक्टर्स के लिए, हमारे लिए कोई महिमा नहीं। हम समझ गए हैं ये अनादि ड्रामा बना हुआ है और अनादि हमारा ये ड्रामा में हमारा पार्ट है ऐसा। फलाने का, फलाने धर्म वालों का ये पार्ट है,

फलाने धर्म वालों का ये पार्ट है और जभी ये अंत आता है, तभी ये सभी आपस में लड़–झगड़ (...) और बाप आ करके अपना पार्ट बजाते हैं। सो पार्ट मिला हुआ है ड्रामा में। इसमें बड़ाई की क्या बात है! भगत लोग बैठ करके (...), भगत लोग जो बैठ करके महिमा करते हैं, हमको वो काम करने का है ही नहीं। हम ऐसे कह देंगे। बाकी हाँ, बाप को याद करना है तो बाप को याद करके– बाबा, ये ड्रामा का राज़ हम लोग किसको भी मालूम नहीं है, ये ड्रामा का राज़ तो बड़ा वण्डरफुल है बाबा। तो ऐसा हम ड्रामा (...), अभी राज़ जानते हैं। बाबा, फिर हम 84 जन्म के बाद फिर भूल जाएँगे। 84 क्या, अभी हमको ये ड्रामा का मालूम है, हम सतयुग में जाएँगे तो बाबा ये भूल जाएँगे! बड़ा विचित्र ड्रामा। तो ये हुआ अपने आपसे बातचीत करनी, समझना, बुद्धि में धारण करना। बाकी कोई बड़ाई तो कुछ देखने में नहीं आता किसकी। सब पार्टधारी हैं, अपना पार्ट बजाते हैं। जैसे वो पार्ट बजाते हैं, तो वो देखते हैं कि एक्टर अच्छा होता है, तो ताली बजाते हैं। एक्ट करते हैं, तो बहुत अच्छा पार्ट बजाते हैं। तो हम भी ताली बजाते हैं, शिवबाबा बहुत अच्छा पार्ट बजाते हैं। शिवबाबा के साथ हम भी बहुत अच्छा पार्ट बजाते हैं; क्योंकि हमारा (...), अभी ताली बजाते हैं ना। पीछे तो नहीं बजाएगा। सतयुग में ताली नहीं बजाएगा। अभी ताली बजाते हैं कि हम लोग का पार्ट बड़ा सुंदर रखा हुआ है। बाबा आ करके हमको ये सारे चक्कर का राज़ समझाते हैं। हम दूसरों को, बड़े–2 विद्वान–आचार्य–पंडित, जो कुछ नहीं जानते हैं, उनको समझाते हैं; परन्तु मुर्दों के समझ में नहीं आता है। क्यों समझ में नहीं आता है? क्योंकि हमारी राजधानी में आने वाले नहीं हैं। सब जा करके समझेंगे, तो सब थोड़े ही स्वर्ग में आ जाएँगे। नहीं। ये भी समझते हैं कि ड्रामा के प्लैन अनुसार जो ब्राह्मण बने हैं, वही आ करके ब्राह्मण बनेंगे, वही आ करके फिर देवता बनेंगे। पीछे देवताओं में राजा–रानी–प्रजा बहुत ही बनेंगे। समझा ना! तो सारा ड्रामा का राज़ समझ करके, सबको पार्ट मिला है। इसमें किसकी भी बड़ाई नहीं है। हाँ, पार्ट ऊँच–नीच सब हैं, सो समझने की बात है। ये तो मिला हुआ है। शिवबाबा भी कहते हैं मुझे भी इस अनादि ड्रामा में पार्ट मिला हुआ है। ये अनादि है बस। कोई पूछे, कब? कब की बात नहीं है। सृष्टि है ही है, चलती ही रहती है सृष्टि। सृष्टि का ये जो चक्कर है एक, तो मनुष्यों ने तो बहुत करके बताया है– आकाश–2, पाताल–2 ये बहुत सृष्टियाँ हैं, ये हैं, फलाना है, टीरे है और वो बड़ी बकवाद बिल्कुल ही। जब गॉड इज़ वन तो क्रियेशन इज़ वन और वही क्रियेशन रूपी सृष्टि ये चक्कर लगाती रहती है। तो देखो, तुम बच्चों को ... मालूम, वो खोजनाएँ बहुत करते रहते हैं। वो समझते हैं ऊपर में भी सृष्टियाँ होंगी, नीचे में भी सृष्टियाँ होंगी। ये बिचारे जा करके खोज करते हैं, देखें इसके आसमान, ये जो मून है ना, उसके ऊपर में क्या है? अच्छा चलो, मून के ऊपर में चले जाओ, तो सूक्ष्मवतन है। अभी उनको तो मालूम नहीं है ना, वो मून के ऊपर में क्या है। मून के ऊपर में तो ये सूक्ष्मवतन है। वहाँ तो मून/चंद्रमा भी नहीं है। वो मून के ऊपर बैठेगा तो ऊपर में क्या देखेगा, कुछ नहीं है। होगा कुछ? कुछ नहीं, लाइट–ही–लाइट है। फिर उनके ऊपर जाओ तो। तो देखो, वो तो वहाँ नहीं जा सकते हैं ना। तुम्हारी आत्मा जा सकती है, जान सकती है। वो लोग तो जानते भी नहीं हैं, ऊपर में क्या है। वो बिचारे कोशिश करके, मून के ऊपर कोशिश करते हैं, साइन्स है ना बच्ची। ये भी तो, साइंस भी तो, साइन्स की हद है ना। ये माया का है ना बच्चे। माया भी कोई कम तो नहीं है ना। माया भी तो यहाँ तक भी तो जा सकती है ना। कहाँ तक जाती है! देखो, क्या–2 बनाते हैं, क्या–2 शुरू करते हैं। माया कोई कम तो नहीं है ना। तो माया की भी तो पॉम्प है ना बरोबर। तो अभी

इस समय में जो कुछ भी सीखते हैं, ये बिजली वगैरह–3, सो सब हैं हमारे लिए, सुख के लिए। यहाँ है दुःख के लिए; सुख और दुःख के लिए यहाँ है। इनसे सुख भी है; देखो एरोप्लेन से सुख भी है, फिर एरोप्लेन से दुःख भी है, गिरते भी हैं। वहाँ तो तुम बच्चे जानते हो कि तुम्हारे जो एरोप्लेन होते हैं, वो कभी नहीं गिरे। उसको कहा ही जाता है–फुल प्रूफ। छोटी बच्ची स्कूल में जाएगी, हैलीकोप्टर में ये बैठी, दबाई ये चाबी, ये गई जा करके भई; क्योंकि वहाँ तो कोई ऐसे–2 एक/दो के सामने तो मकान नहीं हैं ना। नहीं–2, मकान तुम्हारा (...); क्योंकि यहाँ इकट्ठे–2 रहते हैं। देखो, थोड़े भी होते हैं कोई मकान में, तो चोर आकर लूटके ले जाते हैं। वहाँ तो कोई चोर–2 तो होते नहीं। तो एक–2 मकान ये आबू का सारा एक–2 एक के प्रजा का होगा; क्योंकि उनको खेती भी चाहिए। तो जब चाहे इतनी खेती भी तो होनी चाहिए ना। तो वहाँ तो इतनी जमीन, फालतू जमीन एकदम, जितनी चाहिए उतना लेवें। मकान तो नहीं सारी जमीन पर बनेगा, खेती भी तो ज़रूर चाहिए ना, अन्न कहाँ से खाएँगे! तो तुम बच्चों को तो आबू जितनी एक–2 प्रजा को जमीन। जमीन कोई थोड़ी थोड़े ही है। तो थोड़े मनुष्य होते हैं ना बच्ची। कहाँ इस भारत में इस समय में 30 करोड़, 50 करोड़ समझो होगा। (किसी ने कहा– 50) भले 33 करोड़ तो कहते हैं; परंतु कोई हिसाब तो है नहीं कुछ भी। कोई भी शास्त्र के ऊपर, कोई ज़रा–पाई का कोई विश्वास तो है नहीं ना। बच्चे, भक्तिमार्ग के हैं। तो कितना होते हैं, कोई पता थोड़े ही है। बाकी ये तो ज़रूर है, समझ गए कि सतयुग में बिल्कुल छोटा झाड़ होगा– सूर्यवंशी। बहुत शुरुआत में बिल्कुल थोड़ा। पीछे वृद्धि को पाने लग पड़ते हैं। अभी देखो आम का झाड़ लगा है। कितने पत्ते? 10/12 पत्ते। अभी देखो फिर बढ़ते रहेंगे, बढ़ते रहेंगे, दो बरस में झाड़ हो जाएगा, फल भी देने लग पड़ेंगे। तो बाप बैठ करके सबकुछ बच्चों को अच्छी तरह से समझाते हैं कि तुम अभी स्वर्ग का मालिक बनने के लिए यहाँ आए हो, स्वर्गवासी बनने के लिए आए हो। स्वर्गवासी बनने के लिए आए तो बाप को याद करो। तो जो पतित बन गए हो, खाद पड़ी है, तुम्हारी निकल जावे। अभी सहज बातें समझाते हैं। बिल्कुल वो एक कोई भी समझ जावे। तो कोशिश करके कैसे भी कर–करके, दुकान में बैठे, मकान बनाते, जो कुछ भी काम करते, कोशिश करो। ये गाया ही जाता है बच्ची– आशिक और माशूक। वो भी जो जिस्मानी होते हैं, वो विकार के लिए आशिक–माशूक नहीं होते हैं, वो तो अपने शरीर के ऊपर आशिक–माशूक होते हैं। उनको देख करके खुश होते हैं और कुछ भी नहीं बच्चे। यहाँ तो आशिक–माशूक, वो तो लटकते भी हैं ना। ना–2, आशिक–माशूक लटकते भी नहीं हैं। बस, देख करके और बस बड़े खुश होते हैं। बड़े मौज में आते हैं देख करके। उसको कहा जाता है आशिक और माशूक..। बाकी कोई भी गंदगी नहीं उनमें, कुछ भी नहीं। वो विकार के लिए नहीं। तो ये...तुम हैं सभी आशिक एक माशूक के। वो तो खुद आ करके यहाँ कहते हैं– मामेकम् याद करो तो तुम्हारा ये विकर्म सब विनाश हो जाएगा। फिर तुम बादशाही ले लेंगे। सो याद तो करते हो ना बच्चे। आत्मा सो परमात्मा, सभी आत्माएँ पार्ट जब बजाती हैं, भक्तिमार्ग होता है, तब तो सभी आशिक बनते हैं एक माशूक के। सभी याद करते हैं ना भगवान को, खुदा को, ईश्वर को, प्रभु को। नाम बहुत रख दिए हैं। बहुत ढेर–के–ढेर नाम हैं, हज़ारों नाम हैं एक के; क्योंकि वो सबसे ऊँचा भी है। तो तुम बच्चों को याद करना है बाप को अच्छी तरह से। ये भूलना नहीं है। अपने से बात करते रहो– मैं कितना समय बाबा को भूल करते हैं(करता हूँ), जिस बाबा से हमको वर्सा लेना है और जितना हम याद करेंगे, हमारे ऊपर जो कट चढ़ी हुई है, वो निकलेगी। अभी ये बात तो बच्चों को समझाना

सहज है। .... दवाई बताई जाती है ना– ये करना। और तो कोई ये दवाई बता ही नहीं सकते हैं कि तुम अपन को आत्मा समझो; क्योंकि अंतिम जन्म है ना बच्चे। इस समय में अपन को आत्मा समझो; क्योंकि मृत्युलोक से जाना है, वापस घर जाना है। सबको वापस घर जाना है। अंतिम जन्म है मृत्युलोक का। अमरलोक में जाना है। तो बस यही समय है, जबकि बाप आ करके ये शिक्षा देते हैं। तुमको अमरपुरी जाना है। ये भी एक अमर कथा है। तुमको क्या कहता हूँ कि तुम अमर हो आत्माओं। तुमने ये चक्कर तो लगाया है। अभी मामेकम् याद करो तो अमरपुरी में पहुँच जाएँगे और फिर स्वर्ग में तो (...)। अमरपुरी स्वर्ग को भी क्यों कहा जाता है? कि वहाँ काल नहीं खाते हैं। वहाँ रावण का राज्य नहीं है, अकाले मृत्यु भी नहीं होती है। कहा है ना– हम कितना समझाया, बिचारे की बुद्धियाँ, हम कितना भी समझाएँगे, कोई बुद्धि में थोड़े ही बैठ सकेगा और फिर आसामी दे करके भी तो समझाते हैं ना। जो चले, जो श्रीमत देवे वा डान्स करना सीखे, उनको डान्स कराना सीखने में मज़ा आता है ना, टीचर को भी और कोई डान्स करना नहीं सीखते हैं, तो टीचर को मज़ा आएगा? तो देखो, यहाँ ... सीखते आते हैं ज्ञान डान्स करने। देखो, ज्ञान डान्स सीखते हैं। बस, हमको तो चाहिए ज्ञान डान्स करने वाली एक ब्रह्माकुमारी। हम ज्ञान डान्स भी नहीं सीख सकते हैं, तभी क्या करते हो यहाँ? वो फन डान्स है ना, ये ज्ञान का डान्स है ना। अरे, कृष्ण को डान्स कराती थी ना। तो था तो ज्ञान का डान्स ना। कोई वो डान्स थोड़े ही था, वो डान्स करने के। ये तो ज्ञान का डान्स है। वो ज्ञान का डान्स सीखना होता है। तो नहीं सीखते हैं ज्ञान का डान्स, ज्ञान की धारणा नहीं होती है। ज्ञान की धारणा नहीं होती है, तो बाबा समझते हैं– ये योग में ठीक नहीं रहते हैं। इनकी जो बुद्धि है, वो गोल्डन एज्ड में आती ही नहीं है। बस, सिल्वर एज्ड तो क्या, कापर एज्ड में भी नहीं आती है। वो आई आयरन एज्ड में, थोड़ी भी ऊँची नहीं चढ़ती है, जो थोड़ा कुछ समझाय सकें। बस, समझाते ही नहीं हैं। जैसे डम्ब होते हैं ना। तो जो डम्ब(गूँगा) होते हैं ना, वो डेफ(बहरा) भी होते हैं। तो देखो, ये डेफ भी है, डम्ब भी है। डेफ है, अच्छा! सुनते हैं; परन्तु बोलते कुछ नहीं हैं। तो कहेंगे ना– ये डेफ है; क्यों(कि) बोलते नहीं हैं ना, डम्ब है। तो जो बोल नहीं सकते हैं उसको डेफ भी कहेंगे तो डम्ब भी कहेंगे। तो डेफ एण्ड डम्ब का भी यहाँ ये स्कूल तो नहीं है; परंतु डेफ एण्ड डम्ब भी यहाँ आ करके बैठते हैं। बहुत हैं हमारे पास; क्योंकि सुनते हैं; परन्तु बोल नहीं सकते हैं, फिर उसको क्या करेंगे! दोनों टाइटिल देंगे ना! यानी जो सुनते हैं बरोबर, पर बोल नहीं सकते हैं तो उनको कहेंगे– डेफ एण्ड डम्ब। दोनो हैं। अभी वो बिचारे क्या पद पाय सकेंगे। जो सुनते हैं, मज़ा आता है बहुत, बहुत अच्छा समझते हैं। बाबा, बहुत मज़ा आता है सुनने में; परन्तु बाबा, हम बोल नहीं सकते हैं। तो तुम डेफ एण्ड डम्ब हुआ। बोल नहीं सकते हैं, जो सुनते हो वो गुम हो जाता है, तो क्या हुआ? डेफ भी हुआ तो डम्ब भी हुए(हुआ)। तो ऐसे भी तो बाबा के पास बच्चे हैं ना। ऐसे थोड़े ही कि न हैं। जो सुनते हैं और नहीं किसको समझाय सकते हैं तो बाबा ज़रूर कहेंगे ना– ये डेफ है। एक कान से आते हैं, शायद दूसरे कान से निकल जाते हैं तो वो तो डेफ हो गया। वो तो ढरता ही नहीं है। तो ऐसे डेफ एण्ड डम्ब तो नहीं बनना चाहिए ना। ...बादल भरने के लिए। भई हम जाते हैं शिवबाबा के पास, ज्ञान से हम भरपूर हो आ करके वर्षा बरसाएँगे। अभी जो जाएँगे, वर्षा नहीं बरसाएँगे, तो फिर उनको बाबा कहेंगे– आए थे यहाँ बहुत; परन्तु वो डेफ भी थे तो डम्ब भी थे; क्योंकि सीखते नहीं हैं। जब तक सीखेंगे नहीं, तब हम उनको डम्ब भी कहते रहेंगे, डेफ भी कहते रहेंगे। जब मुरली चलाएगा और किसको बोलेगा, तब ही हम कहते हैं– हाँ! ये बोलते भी हैं, वो

बेहरे भी नहीं हैं और गूंगे भी नहीं हैं और नहीं तो, नहीं कोई समझाते हैं, हम समझते हैं– यहाँ आते हैं, शायद बेहरे भी हैं, गूंगे भी हैं। कुछ भी नहीं वहाँ जाकर समझाते हैं, बोलते भी कुछ नहीं हैं। इसलिए तो फिर माँगते हैं ना– हमको वो चाहिए, जो सुन भी सकती है, बोल भी सकती है, हमको वो चाहिए। हम सुन भी नहीं सकते हैं, बोल भी नहीं सकते हैं, इसलिए हमको वो चाहिए। कब तक? जो ब्राह्मणी बैठकर समझाती वो धारण करके, फिर बैठकर गद्दी पर बुलाना चाहिए ना। ब्राह्मण को चाहिए, मुरली आवे एक दिन, अच्छा चलो, ये मुरली आज पढ़ करके बैठ करके सुनाओ। मुझे लज्जा आती है! लज्जा आती है, तुमको बाप से वर्सा लेने में लज्जा आती है! यानी तुम आए हो यहाँ ज्ञान सीखने के लिए, तुमको लज्जा आती है ज्ञान बोलने में(के) लिए। तब मिलेगा धूर वहाँ! (फिर) बाबा कहते हैं– ये भी भावी है ड्रामा की। बाप समझ जाते हैं कि ये क्या पद पाय सकेंगे। जो डेफ एण्ड डम्ब है, क्या तब पाय सकेंगे! तो फिर वो भी तो नम्बरवार होते हैं ना बच्चे– कोई सुनते हैं, कोई थोड़ा बोलते हैं; कोई सुनते हैं, अच्छा बोलते हैं; कोई तो रात–दिन बोलते ही रहते हैं। आओ बच्चे! (रिकॉर्डः– धरती को आकाश पुकारे....) यहाँ हमारे पास डेफ एण्ड डम्ब बैठे रहते हैं। ऐसे मत समझो, नहीं हैं। बस, फिर एक कान से गया, कभी भी किसको समझाय नहीं सके, तो उसको क्या कहेंगे बाबा! फिर वो क्या पद पाएँगे? तो स्कूल में भी ऐसे डेफ एण्ड डम्ब होते हैं ना। पढ़ते हैं, नापास हो जाते हैं; क्योंकि अटेन्शन पढ़ाई में नहीं, अटेन्शन कहाँ दूसरी जगह में चला जाता है। इसलिए पढ़ते नहीं हैं, सुनते नहीं हैं। यहाँ भी ऐसे ही है, ये भी तो स्कूल है ना, यहाँ भी ऐसे ही है। बहुत हैं जो न पढ़ेंगे ज़रूर। बादशाही स्थापन हो रही है, राजाई चाहिए, प्रजा चाहिए, साहुकारों को नौकर भी चाहिए ना, बबूर्ची भी चाहिए ना उनको। तो कहाँ से बनेंगे? तो वो जो डेफ एण्ड डम्ब हैं ना, जो कुछ भी नहीं कर सकते, वो जा करके फिर प्रजा में बबूर्ची बनते हैं। समझा! अभी तो सिर्फ पटना बैठी है और कोई एकर–बेकर हैं। नहीं तो बहुत पार्टियाँ होती हैं ना एकदम।

हैलो! सभी सेण्टर्स के ब्रह्मामुखवंशावली, ब्रह्माकुलभूषण, स्वदर्शनचक्रधारी, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मधुबन से बापदादा और सभी ब्राह्मणकुलभूषण ज्ञान सितारों का सभी बच्चों प्रति आज गुरूवार के दिन यादप्यार और गुडमॉर्निंग।

मीठे–2 सिकीलधे सर्विसेबुल बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का आज गुरूवार के दिन यादप्यार। आज है लकीवार। इसको बेंगोल में लकीवार कहते हैं और लक्क भी कौन–सा है? वृहस्पत की दशा, अविनाशी वृक्षपति। ये वृहस्पत नाम ही निकला है वृक्षपति से। वृहस्पत की अविनाशी दशा। उस अविनाशी दशा में भी फिर दशाएँ हैं। कोई सूर्यवंशी बनेंगे, कोई चन्द्रवंशी, कोई दास–दासियाँ, कोई साहूकार प्रजा और जैसी दशा चाहिए हर एक को इतनी प्राप्त कर सकते हैं। किससे? वृक्षपति से, बाप से, बेहद के बाप से। जो चाहे सो पाय सकते हो अपने पुरुषार्थ से। आशीर्वाद वा कृपा की बात नहीं है। ये जितना जो याद में रहेंगे, धारणा करेंगे, औरों को आपसमान बनाएँगे, ये बहुत ऊँच पद पाएँगे। फिर उनके ऊपर वृहस्पत की दशा। फिर कोई के ऊपर वृहस्पत की दशा, कोई के ऊपर शुक्र की, कोई के ऊपर बुध की, कोई के ऊपर मंगल की, कोई के ऊपर राहू की। समझा ना! ये कायदा है। स्कूल में भी ऐसे ही। ये नम्बरवन वृहस्पत की दशा, फिर वहाँ देखो शुक्र की दशा, फिर वहाँ देखो शनिचर की दशा। ऐसे होता है ना।